



कपास की खेती के लिए १५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २०२६ तक अठारहवीं साप्ताहिक सलाह

अ. मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें:** फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें:** थ्रिप्स, तेला, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।
- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मूलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभी उपयोग करें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

स्वच्छ तरीके से कपास चुनना और भंडारण

- अच्छी बाजार कीमत प्राप्त करने के लिए स्वच्छ कपास चुनने की मानक प्रक्रियाओं का पालन करें।
- कपास कि थैलियों के अलावा प्लास्टिक बैग, प्लास्टिक शीट या अन्य सामग्री का उपयोग कपास के संग्रहण और भंडारण के लिए न करें।

ब.स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		06	07	08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0.6	1.1	0.1	0.7
	जींद								0	0.7	2.9	0.2	0.1
	सिरसा								0	2.7	1.8	0	0.2
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0.6	0.9	0.1	0.7
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm		64.5 to 115.5 mm		115.6 to 204.4			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल 140 से 175 दिनों में पक चुकी है और उसके फलीदार बीज फूट गए हैं। अधिकांश खेतों में कटाई चल रही है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान देर से बोई गई कपास पर 13:00:45 की दर से 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पर्ण स्प्रे किया गया। सफेद मक्खी का प्रकोप कम हुआ है, लेकिन कई खेतों में गुलाबी बॉलवर्म के कारण हरे फलीदार बीजों की क्षति आर्थिक सीमा से अधिक रही। कुछ खेतों में फलीदार बीजाणु के साथ-साथ कपास पत्ती कर्ल वायरस रोग की गंभीरता भी कम देखी गई। हल्की मिट्टी वाले कुछ खेतों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई।

सिरसा में, फसल 149 से 169 दिनों में पक चुकी है और कटाई की अवस्था में है। अधिकांश स्थानों पर दूसरी कटाई चल रही है। कपास के खेतों में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया, जिससे पौधों की संख्या कम रही। पोषक तत्वों और पानी की कमी के कारण कुछ स्थानों पर पैरा विल्टिंग के लक्षण भी देखे गए। सभी स्थानों पर हरा तेला और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर से नीचे अभिलेखित की गई। सफेद मक्खी की संख्या आर्थिक नुकसान के स्तर से ऊपर 07-23/3 पत्तियों के बीच पाई गई। गुलाबी बॉलवर्म का प्रकोप भी आर्थिक नुकसान के स्तर से ऊपर देखा गया, जिससे 40-50% हरी फलियों को नुकसान पहुंचा। डस्की कॉटन बग की अत्यधिक उच्च संख्या स्क्वेयर, आधी खुली हरी फलियों, ब्रेक्टियोल, खुली फलियों और तोड़ी गई फलियों में देखी गई।

सलाह:

हिसार में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास के खेतों में सिंचाई न करें। देर से बोई गई कपास की फसल में, जरूरत के अनुसार 13:00:45 का 2 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से पतियों पर छिड़काव (फोलियर स्प्रे) करें। चूंकि गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) का प्रकोप दिखने लगा है, इसलिए प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रेप लगाएं। गुलाबी सुंडी के प्रकोप की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूलों या 20 हरे डोड़ों (बॉल्स) को देखें। यदि गुलाबी सुंडी का प्रकोप आर्थिक स्तर (5% से अधिक) को पार कर जाए, तो 100 ग्राम इमामेक्टिन बेंजोएट 5 SG, या 500 मिली प्रोफेनोफोस 50 ईसी या 400 मिली क्विनालफोस 20 AF प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी दूसरे कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न (रूट रॉट) और मुरझान (विल्ट) से प्रभावित हिस्सों में, प्रभावित पौधों की जड़ों और उनके आसपास के पौधों की जड़ों के पास 1.2 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी प्रति लीटर पानी के घोल से अच्छी तरह भिगो दें (ड्रेन्चिंग करें)। यदि 'पैराविल्ट' (अचानक मुरझाना) के लक्षण दिखाई दे तो लक्षण दिखने बाद एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी (250 ग्राम) या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी (120 ग्राम) के साथ 2 किलोग्राम यूरिया को 100 लीटर पानी में मिलाकर पौधों की जड़ों के पास डालें। बॉल रॉट (डोड़ों की सड़न) और पतियों पर धब्बों (लीफ स्पॉट) के प्रबंधन के लिए, फूल आने के समय (60-120 दिनों के बीच) और मौसम की स्थिति को देखते हुए, 10 लीटर पानी में 30 ग्राम कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% WP का छिड़काव करें। इसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी (25-30 ग्राम), या प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली), या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% SC (10 मिली), या फ्लक्सपायरोक्साइड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC (6 मिली) का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल केवल फसल की स्थिति, टिंडों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही करें। चूंकि कपास की तुड़ाई शुरू हो चुकी है, इसलिए अच्छी तरह खुले हुए टिंडों को तेज धूप वाले दिनों में तोड़ें और उपज को ठंडी व सूखी जगह पर रखें। तनाव के कारण खुले हुए टिंडों को तब तोड़ें जब उनकी नमी पूरी तरह सूख जाए।

सिरसा में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास को सूखा, कचरा-मुक्त और ओस-रहित अवस्था में तोड़ें। कपास (seed cotton) को साफ-सुथरे और चूहों से मुक्त गोदामों या कमरों में रखें। आर्थिक नुकसान स्तर का आकलन करने के लिए, नियमित अंतराल पर गुलाबी सुंडी की निगरानी करें। इसके लिए प्रति एकड़ 2 गंध पाश (लगातार 3 रातों तक 5-8 पतंगों का फंसना) का उपयोग करें या 'ग्रीन बोल क्षतिग्रस्त नमूनाकरण' (प्रति एकड़ 20 टिंडों में से 2 क्षतिग्रस्त टिंडे मिलना) करें। गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए, प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी में इनमें से किसी एक का छिड़काव करें: एथियोन 50 EC (800 ml), फेनवेलरेट 20 EC (100-200 ml), लैम्ब्डा-साइहेलोथ्रिन 5 EC (200 ml), साइपरमेथ्रिन 10 EC (200-300 ml), साइपरमेथ्रिन 25 EC (80-100 ml), डेल्टामेथ्रिन 2.8 EC (160-200 ml), अल्फा-मेथ्रिन 10 EC (100-125 ml), या फेनप्रोपाथ्रिन 10 EC (300-400 ml)। जरूरत पड़ने पर कीटनाशकों को बदल-बदल कर (rotation में) इस्तेमाल करें। ये कीटनाशक 'डस्की कॉटन बग' (dusky cotton bugs) को भी नियंत्रित करेंगे। देर से बोई गई फसल में जड़ सड़न (root-rot) और विल्ट (wilt) रोग के प्रबंधन के लिए, जिन पौधों में शुरुआती लक्षण दिखें और उनके आसपास के पौधों की जड़ों में ट्राइकोडर्मा एसपीपी. 1% डब्ल्यूपी (5 ग्राम प्रति लीटर पानी) या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल डालें। रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल केवल फसल की स्थिति, टिंडों की संख्या और आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के बाद ही करें।

कपास तोड़ने के बाद संक्रमित पौधों या उनके हिस्सों को खेत की मिट्टी में न मिलाएं। आर्थिक रूप से संभव होते ही फसल को जल्द से जल्द हटा दें। इससे बॉलवर्म से होने वाला नुकसान कम होगा और वे अगले फसल सीजन तक नहीं बच पाएंगे। आखिरी बार फसल तोड़ने के बाद, खेत में भेड़-बकरियों को चरने दें, ताकि बॉलवर्म (इल्ली) के बचे हुए अवशेष कम हो सकें। यदि संभव हो, तो श्रेडर की मदद से कपास के डंठलों को काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिए। यदि जरूरत हो, तो कपास के डंठलों को खेत से दूर सीधा खड़ा करके ढेर लगा दें। बीमार पौधों को खेत की मिट्टी में न मिलाएं।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		06	07	08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0
	नागौर								0	0.1	0.1	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0.2	2.6	0.2	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm			64.5 to 115.5 mm		115.6 to 204.4 mm		
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा		

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल 145 से 161 दिन की हो चुकी है और इस समय इसमें टिंडे (bolls) खुल रहे हैं तथा कटाई का चरण चल रहा है। समय पर बोई गई फसल में तुड़ाई का काम जारी है। प्रति तीन पत्तियों पर जैसिड की संख्या 0.0 से 9.0, सफेद मक्खी की संख्या 2.0 से 17.0 और थ्रिप्स की संख्या 0.0 से 4.0 के बीच देखी गई है।

बांसवाड़ा में, फसल 99 से 106 दिन की है और इस समय इसमें टिंडे विकसित हो रहे हैं। समय पर छिड़काव किए जाने के कारण खेत साफ हैं और फसल की स्थिति अच्छी है। खरपतवार का कोई प्रकोप नहीं है। रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक नुकसान स्तर से नीचे है, जबकि जैसिड का प्रकोप आर्थिक नुकसान स्तर से ऊपर है। गुलाबी सुंडी या किसी अन्य बीमारी का कोई प्रकोप नहीं देखा गया है। हालांकि, कुछ खेतों में जड़ सड़न और मुरझाने के लक्षण दर्ज किए गए हैं।

सलाह:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी फसलों में कीटों और बीमारियों की नियमित निगरानी करें। जिन इलाकों में पिछले साल गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) का प्रकोप देखा गया था, वहां इस साल भी विशेष निगरानी रखने की जरूरत है। गुलाबी सुंडी की गतिविधि पर नजर रखने के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाएं। यदि टिंडों (बॉल्स) में 5% से अधिक नुकसान दिखाई दे, तो 2.5 मिली प्रोफेनोफोस 50% EC, या 0.50 ग्राम इमामेक्टिन बेंजोएट 5 SG, या 1.0 मिली इंडोक्साकार्ब 14.5 SC प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जैसिड और सफेद मक्खी (व्हाइटफ्लाई) को नियंत्रित करने के लिए 0.40 ग्राम फ्लोनिक्मिड 50 WG, या 1.50 मिली एफिडोपाइरोपेन 50 DC, या 0.5 ग्राम थियामेथोक्सम 24 WG प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी के निम्फ (बच्चों) के मामले में, 2.5 मिली पाइरीप्रॉक्सीफेन 10% EC या 1.25 मिली स्पाइरोमेसिफेन 22.9 SC प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि थ्रिप्स का प्रकोप आर्थिक नुकसान के

स्तर से ऊपर चला जाए, तो 0.84 मिली स्पिनेटोरम 11.7 SC या 2.5 मिली प्रोफेनोफोस 50 EC प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फसल की तुड़ाई (चुनाई) के समय कीटनाशकों का छिड़काव न करें।

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूबर और उदयपुर) में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास के खेतों में रस चूसने वाले कीटों के प्रकोप की लगातार निगरानी करते रहें। यदि रस चूसने वाले कीटों का प्रकोप आर्थिक नुकसान के स्तर से ऊपर चला जाए, तो 5% नीम के बीज के अर्क (NSKE) या 5 मिली एज़ाडिराक्टिन 1500 ppm (0.15% EC) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। सफेद मक्खी और जैसिड को नियंत्रित करने के लिए प्रति एकड़ 8-10 पीले चिपचिपे जाल (येलो स्टिकी ट्रैप) लगाएं। यदि रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC (1.25 लीटर/हेक्टेयर), डायफेन्थियुरोन 50 WP (625 ग्राम/हेक्टेयर), या फ्लोनिक्मिड 50 WG (200 ग्राम/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप (5 प्रति हेक्टेयर) लगाएं। गुलाबी सुंडी के प्रकोप पर लगातार नज़र रखें और प्रभावित फूलों (गुलाब के आकार के फूल) को उनके अंदर मौजूद इल्लिरियों (लार्वा) सहित नष्ट कर दें। ढेर से बोई गई फसलों में पत्तों पर धब्बे (लीफ स्पॉट) की बीमारी के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोज़ेब 63% डब्ल्यूपी (30 ग्राम) का छिड़काव करें। इसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी (25-30 ग्राम), या प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC (10 मिली), या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% + डाइफेनोकोनाज़ोल 11.4% SC (10 मिली), या फ्लक्सपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC (6 मिली) को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। कवकनाशी (फंगीसाइड) या कीटनाशक का छिड़काव केवल फसल की स्थिति, टिंडों (बॉल्स) की संख्या और आर्थिक लाभ-हानि का आकलन करने के बाद ही करें।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		अक्टूबर							अक्टूबर				
		06	07	08	09	10	11	12	14	15	16	17	18
	Khargaon	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	Dhar	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	Khandwa	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 mm		2.5 to 15.5 mm		15.6 to 64.4 mm			64.5 to 115.5 mm			115.6 to 204.4 mm	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, बोई गई फसल 91 से 139 दिन की हो चुकी है और इस समय इसमें फूल आने तथा टिंडे (बॉल) विकसित होने की अवस्था चल रही है। जहाँ भी जरूरत पड़ी, वहाँ निराई-गुड़ाई की गई और सिंचाई के साथ उर्वरक (फर्टिगेशन) दिए गए। खेतों में मौसमी खरपतवार उग आए हैं। कुछ खेतों में जैसिड, एफिड और सफेद मक्खी का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी बीमारी के फैलने की सूचना नहीं है।

सलाह:

खंडवा में, किसानों को समय पर निराई-गुड़ाई करने की सलाह दी जाती है। यदि लंबे समय तक सूखा रहने के कारण फसल में नमी की कमी (मॉइस्चर स्ट्रेस) हो रही है, तो 150 से 200 लीटर पानी में 2 किलोग्राम '13:00:45' उर्वरक मिलाकर, 10 दिनों के अंतराल पर दो बार पतियों पर छिड़काव (फोलियर स्प्रे) करें। गुलाबी सुंडी (पिंक बॉलवर्म) की निगरानी के लिए प्रति एकड़ 2 गंध पाश लगाएं। रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए

NSKE 5% + नीम का तेल (5 मिली प्रति लीटर) या नीम के तेल पर आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 ppm, 5 मिली प्रति लीटर) के साथ 1.0 ग्राम कपड़े धोने का डिटर्जेंट मिलाकर छिड़काव करें। यदि 'पैराविल्ट' (अचानक मुरझाना) के लक्षण दिखाई दें, तो लक्षण दिखने के तुरंत बाद, 100 लीटर पानी में 250 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% डब्ल्यूपी या 100 ग्राम कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी के साथ 2 किलोग्राम यूरिया मिलाकर पौधों की जड़ों के पास (drenching) डालें; ऐसा एक सप्ताह के अंतराल पर 2-3 बार करें। यदि लंबे समय तक सूखा रहता है, तो फसल में फल आने की मुख्य अवस्था के दौरान, 200 लीटर पानी में 2 किलोग्राम '13:00:45' उर्वरक मिलाकर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पत्तियों पर छिड़काव करें। कपास के फूलों को प्राकृतिक रूप से झड़ने से रोकने के लिए, 10 लीटर पानी में 4 मिली अल्फा नेफ्थाइल एसिटिक एसिड (NAA) 4.5% SL मिलाकर पत्तियों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट (<https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory>) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:

Dr. Vijay N. Waghmare

Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere	Dr. A. S. Tayade	Dr. A. H. Prakash	Dr. S.K. Verma
Dr. S.K. Sain	Dr. Rishi Kumar	Dr. Babasaheb B. Fand	Dr. Ramkrushna GI
Dr. S.P. Gawande	Dr. Shivaji Thube	Dr. R.R. Chapke	

Regional language translation:

Hindi	: Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra
Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani